Dr. Gautam Kumar
BA Part - III
Paper - V

व्यवहारवादी दृष्टिकोण
(Behavioural Approach)

व्यवहारवादी दृष्टिकोण के द्वारा लोक प्रशासन का अध्ययन करने हेतु उससे संबंध व्यक्तियों और समूहों के वास्तविक व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। साइमन, बीनर, सायर्ट, हैंडी, रयोक्स आदि वैज्ञानिक लोक प्रशासन के व्यवहारवादी दृष्टिकोण को अपनाते हैं। सिमकर्ति के मतानुसार, लोक प्रशासन का व्यवहारवादी दृष्टिकोण चार विशेषताओं से युक्त है।

(i) व्यक्ति तथा प्रशासनिक ढांचे में उसके व्यवहारों व संबंधों पर जोर देना।

(ii) प्रशासनिक संगठन का अध्ययन एक सामाजिक प्रणाली के रूप में किया जाता है।

(iii) सम्प्रभुता सिद्धांत के स्थान पर औचित्यता (Legitimacy) के सिद्धांत पर बल दिया जाना।

(iv) संचार के साधनों में औपचारिकता के स्थान पर अनौपचारिक साधनों का अध्ययन।

व्यवहारवादी उपागम एक ऐसा उपागम है जिसका उद्देश्य लोक प्रशासन को आधुनिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में विकसित सिद्धान्तों, पद्धतियों, खोजों और दृष्टिकोणों के निकट सम्पर्क में लाना है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण के अनुसार, लोक प्रशासन के अध्ययन की निम्नलिखित पद्धतियाँ हैं:—

(i) मनोवैज्ञानिक पद्धति (Psychological Method):— प्रशासन के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक पद्धति का प्रतिपादन मिस फौले ने किया था। इस पद्धति के अनुसार मानव मनोविज्ञान पर आधारित व्यवहार को सही माना जाता है। इस मनोवैज्ञानिक पद्धति की मान्यता है कि प्रशासन का संबंध मानव से है और प्रशासनिक प्रक्रियाएँ मानव व्यवहार द्वारा प्रभावित होती हैं। प्रशासन के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि व्यक्तियों और समूहों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं के कारण प्रशासन के भीतर अनौपचारिक संबंध व संगठन प्रकट हो जाते हैं। अतः मनोविज्ञान द्वारा प्रशासनिक संगठनों की निपुणता का निर्धारण किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(ii) व्यक्ति इकाई / विषय पद्धति (Case Study Method):- इस पद्धति का विकास अमेरिका में हुआ है। इस पद्धति के अन्तर्गत प्रशासन की किसी एक विशिष्ट नीति कार्यक्रम परियोजना पर अपनी समस्या का सर्वांगीण और तथ्यात्मक अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के उपरान्त उसके परिणामों के आधार पर उस घटना के संबंध में निष्कर्ष लिया जाता है। वर्ष 1960 के बाद Indian Institute of Public Administration कई प्रशासनिक मामलों का case study प्रकाशित कर रहा है।

(iii) परिमाणात्मक पद्धति (Quantitative Method):- परिमाणात्मक पद्धति को सांख्यिकीय पद्धति भी कहा जाता है। इस पद्धति का प्रतिपादन रिकर्ट तथा सायमन ने किया था। यह भौतिक अथवा प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन की एक प्रमुख विधि है। इस पद्धति का आधार आंकड़े, तथ्य ज्ञान व सांख्यिकी है। प्रशासकीय कार्यों और परिणामों को संख्याओं के आधार पर प्रकट करना ही इस अध्ययन की एक प्रमुख विधि है। लोक प्रशासन के अन्तर्गत इस अध्ययन पद्धति का प्रयोग प्रशासनिक उपलब्धियों तथा प्रतिवेदन के रूप में तथ्यों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

(iv) पारिस्थितिकीय पद्धति (Ecological Method):- पारिस्थितिकीय पद्धति के अनुसार कोई भी अभिकरण, नीति समसामयिक परिवेश की देन होती है। परिवेश से तात्पर्य किसी समय में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक व भौगोलिक परिस्थितियाँ होती हैं। इन परिस्थितियों में प्रशासनिक व्यवहार, प्रशासनिक संस्कृति के उन मूल्यों से जनित होता है जिनमें रहकर यह कार्य करता है। प्रशासनिक संस्कृति, समग्र रूप में सामाजिक व्यवस्था के साथ प्रशासनिक व्यवस्था के मूल्यों और विशेषताओं की आपसी क्रिया का परिणाम है। परिवेश लोक प्रशासनिक संगठन, प्रक्रियाओं और व्यवहारों को प्रभावित करता है और स्वयं भी प्रभावित होता है। परिवेश के परिवर्तन होने पर लोक प्रशासन में परिवर्तन होना स्वाभाविक है अन्यथा लोक प्रशासन अपना संतुलन खो बैठता है।

Scanned with CamScanner